राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

सत्र् 2025–26 नियमित/स्वाध्यायी दो वर्षीय पाठ्यक्रम

Marking Scheme

Diploma in Performing art (D.P.A.) Vocal/Instrumental (Non-Percussion)

1st Year Diploma Course

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NON PERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory Music –Theory	100	33
2	PRACTICAL- Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

Diploma in Performing Arts (D.P.A.)

Vocal/Instrumental (Non-Percussion) 1st Year Diploma Course

सत्र् 2025–26 नियमित/स्वाध्यायी सैद्धांतिक–प्रथम प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक :– 100**

न्यूनतम :– 33

1. पूर्वराग, उत्तरराग, संधिप्रकाश राग, परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।
2. भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति की विस्तृत जानकारी।
3. राग विस्तार में वादी, सवांदी, अनुवादी, विवादी, अल्पत्व, बहुत्व एवं न्यास स्वरों का महत्व।
4. तान एवं तोड़ो की परिभाषा, तान एवं तोड़ो में अन्तर, तानों के प्रकार।
5. मीड़, सूत, घसीट, खटका, मुर्की, जमजमा, कृंतन, गमक आदि की सामान्य जानकारी।
6. जीवन परिचयः– अमीर खुसरो, स्वामी हरिदास, तानसेन एवं राजा मानसिंह तोमर का जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान
7. निम्न तालों को तालिपि में दुगनु–चौगुन सहित लेखनः– त्रिताल, एकताल, झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाड़ा, दीपचन्दी, झूमरा तथा चौताल।
8. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचयः– बिहाग, भीमपलासी, भैरवी, केदार, रामकली, मालकौंस, शुद्धकल्याण।
9. सितार वाद्य पर दो से लेकर आठ स्वरों के अलंकार का अभ्यास।

Diploma in Performing art (D.P.A.)Vocal/Instrumental
(Non-Percussion) 1st Year Diploma Course
सत्र् 2025–26 नियमित/स्वाध्यायी प्रायोगिक प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक :– 100
न्यूनतम :– 33

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के रागः–बिहाग, भीमपलासी, भैरवी, केदार, रामकली, मालकौंस, शुद्धकल्याण।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका एवं लक्षणगीत का गायन (गायन के परीक्षार्थियों के लिये)सरगम गत (वादन के परीक्षार्थियों के लिये)।

   (ब) पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित रचना (ख्याल) अथवा मसीतखानी गत का आलाप तानों सहित प्रदर्शन।

   (स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल) अथवा रजाखानी गत का आलाप तानों सहित प्रदर्शन।

   (द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद अथवा धमार, (दुगुन–चौगुन सहित प्रदर्शन) दो तराना एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीन ताल से पृथक अन्य ताल में एक मध्यलय रचना का तानों सहित प्रदर्शन।

   2 पाठ्यक्रम के तालों को हाथ से ताली देकर ठाह दुगुन–चौगुन सहित प्रदर्शन

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 3 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामश्रय झा